जन्म के साथ ही हो सकेगी मूकबधिरता की पहचान

युवती ने तैयार किया सस्ता व सरल उपकरण

आईआईटी-टैडेक्स में सात सफल लोगों ने दी राय

अहमदाबाद. देश में हर साल मूकबधिरता के साथ पैदा होने वाले बच्चों के लिए एक आशा की किरण जगी है। नीति कैलास ने एक ऐसा उपकरण तैयार किया है, जिसकी मदद से बच्चे के पैदा होने के साथ ही उसकी मूकबधिरता की पहचान सुनिश्चित की जा सकती है। मूकबधिरता की जल्द पहचान होने पर बच्चे का इलाज भी हो सकता है, जिससे उसके ठीक होने की संभावना बढ़ सकती है। सोहम इन्नोवेशन लैब की सह संस्थापिता नीति कैलास ने रविवार को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गांधीनगर में आयोजित प्रथम टैडेक्स व्याख्यान श्रृंखला के दौरान यह बात कही। उन्होने दावा किया कि अभी तक बाजार में उपलब्ध इस प्रकार के उपकरण की तुलना में उनका ये उपकरण न सिर्फ सस्ता है बल्कि इसे उपयोग करना भी अपेक्षाकृत मौजूदा अन्य उपकरणों की तुलना में सरल है। अभी आने वाले उपकरण की कीमत दस हजार अमरीकी डॉलर है। उसका उपयोग करने के लिए साउंड प्रूफ कमरे में ही किया जाता है, लेकिन उनके उपकरण के लिए ऐसे किसी कमरे की जरूरत नहीं है।

नीति का कहना था कि अभी माता-पिता एक से दो साल तक बच्चे के बोलने का इंतजार ही करते रहते हैं। उसके नहीं बोलने पर वे चिकित्सक के पास जाते हैं और फिर उसकी जांच कराई जाती है।इसके चलते दो वर्षों का कीमती समय बीत जाता है। इस समय के दौरान ही बालक इशारों व आवाज से काफी सीखता है, जो मूकबधिरता के चलते नहीं सीख पाता और अन्य बालकों की तुलना में काफी पिछड़ जाता है। लेकिन इस उपकरण के चलते जन्म के साथ ही उसकी मूकबधिरता का पता लगा सकते हैं।

इसका फायदा ये होगा कि बालक का उपचार संभव है या नहीं यह समय रहते पता चल जाएगा और यदि उपचार संभव होगा तो उसका समय से उपचार शुरू हो सकता है और ऐसे में उसके ठीक होने की संभावना बढ़ जाती है। इसके अलावा टैडेक्स में स्वास्थ्य क्षेत्र में बेहतर मुकाम पाने वाली डॉ. रुचि दास, संगीत विज्ञान में बेहतर काम करने वाले डॉ.विद्याधर ओक, कला जगत में नाम कमाने वाले जितेन ठकराल व समीर टगरा और आईआईटी बॉम्बे से पढ़ाई करने के बाद अध्यात्मिक गुरू बनने वाले खुर्शिद बाटलीवाला व बाल नाटकों की एंकरिंग करने वाले हारुन रॉबर्ट ने भी अपने विचार व्यक्त किए।